

विद्यापीठ अुदा आयोग
संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठ, अमरावती
कला शाखांतर्गत शोध प्रकल्प
(Minor Research Project)

शोध विषय

उत्तर आधुनिक युग के हिंदी दलित कथा साहित्य में समाज चेता

शोधकर्ता

डॉ. अरुण प्र. घोगरे

सहयोगी प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष हिंदी,
बी. एस. पाटील महाविद्यालय,
परतवाडा

उपसंहार -

उत्तर आधुनिक युग के हिंदी दलित कथा-साहित्य के अध्ययन के उपरांत हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि साहित्य मात्र अपनी व्यथा की कथा कहने वाला ही साहित्य नहीं है, बल्कि वह मनोवादी व्यवस्था व संवर्णों के व्यवहार में छिपे वर्ण संस्कारों का खुलासा भी करता है। यह संवर्णों की जाति-विषयक मानसिकता को झकझोरता है तथा संविधान प्रदत्त नए मूल्यों के साथ जीवन जीने की प्रेरणा भी देता है। कथा- साहित्य पर पूर्णतया डॉ. अम्बेडकर का प्रभाव पड़ा है। दलित साहित्य का जन्म ही एक सामाजिक फलनिष्पत्ति के उद्देश्य से हुआ है। सामाजिक बंधनों को तोड़कर स्वतंत्रता, समता एवं बंधुता के मूल्य पर एक नया समाज का निर्माण करना चाहता है। दलित कथाकार बड़ी सरलता से अपने गुण दोषों को, सामाजिक त्रासदी को, सामाजिक अंतर्विरोधों को, सामाजिक विडंबनाओं को प्रस्तुत ही नहीं करता बल्कि अपने समाज में चेतना भर देता है। अपने शब्दों का शस्त्र वह अपने समाज के हाथों में सौंपना चाहता है, ताकि सोया हुआ समाज जागे, उनका स्वाभिमान जागृत हो, वे अपना हक माँग सकें, परिवर्तन की यात्रा में सब शामिल हों, विचारों का सोना लूटा जाए और क्रांति की लहर पैदा होने के साथ-साथ डॉ. अम्बेडकर का सपना पूरा हो।

भारत आज विकास के दौर से गुजर रहा है। समस्यायें विकास की प्रक्रिया को रोकने का प्रयास करती हैं। किसी भी समाज या व्यक्ति द्वारा उसके अतीत में की गई भूलें उसके वर्तमान और भविष्य में अवरोध बन जाते हैं। भारत जैसे पारंपरिक देश में इसकी सर्वाधिक मार दलित वर्ग आज भी झेल रहा है। समाज के ठेकेदारों ने इस मौके का लाभ उठाया, परिणाम स्वरूप समाज दो वर्गों में बँट गया। बड़े और बड़े, छोटे और छोटे होते चले गए। अमीर खुसरो से लेकर प्रेमचंद तक सभी ने इस खाई को पाटने की कोशिश की। बीसवीं सदी में प्रेमचंद ने अपने साहित्य के माध्यम से दलित वर्ग की दुर्दशा एवं व्यथा का चित्रण किया किंतु आजादी के आंदोलन की गूँज से दलितों के क्रंदन और आक्रोश का स्वर प्रभावहीन हो गया, जिसे प्रेमचंद उभारना चाहते थे। कालांतर में भारतीय स्वतंत्रता के पश्चात दलितों को शोषण के भयावह दलदल से बाहर निकालने में डॉ. अम्बेडकर ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। उन्होंने दलितों को सतर्क और सजग ही नहीं किया वरन्, उनके जीवन स्तर को ऊँचाई भी प्रदान की। इसके बावजूद भी दलित वर्ग का वर्चस्व, सम्मान और प्रतिष्ठा जटिल प्रश्न बनकर समाज में फैले इस अंतर्विरोध, अंतर्द्वंद्व और वैषम्य को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिये, दलित वर्ग में चेतना भरने के उद्देश्य से हिंदी साहित्य में दलित साहित्य के रूप में नयी धारा को प्रवाहित किया गया। इस दिशा में अनेक दलित साहित्यिक और उनका साहित्य प्रयत्नशील है। विकास की धारा में शामिल होने के लिए दलित वर्ग की छटपटाहट आज के दलित साहित्य का केंद्रीय विषय है। यह शोध इस बृहद फलक के विश्लेषण का लघु प्रयास है।

